काशी हिंदू विश्वविद्यालय के 91वें दीक्षांत समारोह के अवसर पर भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील का अभिभाषण

वाराणसी, 13 मार्च, 2009

देवियो और सज्जनो,

मुझे काशी हिंदू विश्वविद्यालय के 91वें दीक्षांत समारोह में उपस्थित होकर प्रसन्नता हो रही है। इस अवसर पर मैं आप सबको शुभकामनाएं देती हूँ।

काशी नगरी में स्थित यह एक विख्यात विश्वविद्यालय है। काशी भारतीय संस्कृति, साहित्य, और संगीत का केंद्र रहा है। यहां पतित-पावन गंगा के साथ सांस्कृतिक विविधता की धाराएं बह रही हैं जो भारत की एक अनूठी पहचान है। यह हमारे संतों, मनीषियों, महापुरुषों की जन्म और कर्म-स्थली रही है। यहाँ तुलसीदास जी ने रामचरित मानस की रचना कर जहाँ समाज को संस्कारित किया वहीं सारनाथ में भगवान गौतम बुद्ध ने सत्य, अहिंसा और मानव प्रेम का अपना प्रथम उपदेश भी दिया था।

पंडित मदन मोहन मालवीय जी ने शिक्षा के महत्त्व को जानकर और अपनी दूरदर्शिता का परिचय देते हुए वर्ष 1916 में यहाँ काशी हिंदू विश्वविद्यालय स्थापित किया। इसका मुख्य उद्देश्य भारत की प्राचीन संस्कृति को संजोकर रखते हुए, आधुनिक शिक्षा देकर अधिक-से-अधिक संख्या में देशभक्त नागरिकों को तैयार करना था, जो राष्ट्र प्रेम की भावना से प्रेरित होकर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सकें। सही शिक्षा की यही सही दिशा है।

जिस विश्वविद्यालय का ऐसा प्रभावशाली इतिहास रहा है, स्वाभाविक है कि उसका अपना एक विशिष्ट स्थान होगा। जिस कार्य का प्रारंभ मालवीय जी ने किया था, उसे आगे ले जाना हम सभी का कर्तव्य है। इस अवसर पर हम इस विश्वविद्यालय की नींव रखने वाले मालवीय जी और उन्हें इस महत्त्वपूर्ण कार्य में सहयोग देने वाली विभूतियों को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। यह भी खुशी की बात है कि डॉ. कर्ण सिंह जैसे विद्वान व्यक्ति इसका नेतृत्व कर रहे हैं।

शिक्षा राष्ट्र के प्रत्येक क्षेत्र को विकसित करती है और हरेक क्षेत्र को सिंचित करके देश में समृद्धि लाती है। जिस प्रकार शरीर में हृदय सब अंगों को रक्त पहुँचाकर ऊर्जावान बनाता है, उसी प्रकार शैक्षिक संस्थाएं समाज, शासन, विज्ञान, कला और साहित्य के क्षेत्र में योग्य और कुशल मानव संसाधन उपलब्ध कराते हैं। इन संस्थानों पर यह जिम्मेदारी है कि वे ऐसे विद्यार्थियों का निर्माण करें जो देश व समाज के विकास और प्रगति में योगदान दे सकें। इसी कारण कई बार कहा जाता है कि विश्वविद्यालयों द्वारा दी जा रही शिक्षा का स्तर ही देश की प्रगति और समृद्धि का मापदण्ड है। मैं समझती हूँ कि आप इस मापदण्ड पर खरे उतरेंगे। इस संदर्भ में, मैं यह कहना चाहती हूँ कि सभी को शिक्षा के अवसर मिलने चाहिए। देश के सर्वांगीण विकास में महिलाओं की विशेष भूमिका होती है। विश्वविद्यालयों को महिलाओं की शिक्षा, उन्हें कौशल और ज्ञान से सुसज्जित करने के लिए निरन्तर कार्य करना चाहिए।

आज के समय में कोई इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि अपने और अपने परिवार के सदस्यों के अच्छे जीवन निर्वाह के लिए हमें पर्याप्त धन कमाना पड़ता है। लेकिन इसके लिए दो महत्त्वपूर्ण सिद्धांत ध्यान में रखे जाने चाहिए—पहला, सही तरीके से धन कमाना। दूसरा, कमाने के साथ-साथ समाज कल्याण करना। अत्यधिक उपभोक्तावाद, धन का लालच रखने से समाज को बड़ा नुकसान होगा। इन सिद्धांतों का पालन न करने से प्राकृतिक संसाधनों पर अनावश्यक बोझ पड़ रहा है, भ्रष्टाचार में वृद्धि हो रही है और कुछ हद तक युवाओं में आपराधिक प्रवृत्तियाँ भी बढ़ रही हैं। यह चिंता की बात है।

वर्तमान समय कठिन और चुनौतिपूर्ण है, जहाँ एक तरफ समृद्धि के साथ-साथ गरीबी, भुखमरी और बीमारियाँ मौजूद हैं। दूसरी तरफ बढ़ती हुई संगठित हिंसा और आतंकवादियों द्वारा किए जा रहे हिंसात्मक कार्यों की चुनौती है। ऐसे समय में उच्च शैक्षिक संस्थानों को अपनी विशेष भूमिका निभानी होगी।

विद्यार्थियों में ऐसे मानवतावादी मूल्यों का संचार करना चाहिए जो जीवनभर उनका मार्गदर्शन करते रहें। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कई महत्त्वपूर्ण शिक्षाएं दी हैं

जिनसे छात्रों को परिचित कराया जाना चाहिए। जैसे, गांधी जी ने कहा था—

> "गरीब से गरीब और कमजोर से कमजोर व्यक्ति का चेहरा याद करें जिसे आपने देखा हो, और स्वयं से पूछो कि जो काम आप करने जा रहे हो, क्या वह उस व्यक्ति के लिए किसी भी रूप में फायदेमंद होगा?"

गांधी जी का यह कथन सदैव याद दिलाता रहेगा कि आपको किस दिशा में कार्यरत रहना चाहिए। यदि सभी शिक्षक अपने विद्यार्थियों को उत्तम गुणों से सम्पन्न करेंगे तो उनमें सामाजिक न्याय, सहबंधुत्व और सहनशीलता की भावना आएगी। इससे अनेकता में एकता के बीच फलफूल रहे हमारे लोकतंत्र और राष्ट्र के विकास में तेजी आएगी। विश्वविद्यालयों को ऐसी ही शिक्षा प्रणाली की व्यवस्था करनी चाहिए।

आधुनिक युग विज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी का है। इस क्षेत्र में नित नई-नई खोजें और अनुसंधान हो रहे हैं। इन सबका उपयोग आज की चुनौतियों का सामना करने और मानवता की भलाई करने में सहायक होगा, ऐसी उम्मीद है। भारत के विश्वविद्यालयों को अनुसंधान के क्षेत्र की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए ताकि भारत विज्ञान और प्रौद्योगिकी में अग्रणी बन सके।

मैं उन सभी विद्यार्थियों को बधाई देना चाहती हूँ जिन्हें आज दीक्षांत समारोह में उपाधियाँ प्रदान की गई हैं। आज आप अपने जीवन के एक नए चरण में प्रवेश कर रहे हैं। मैं समझती हूँ कि आपमें उत्साह भरा हुआ है और ऐसा होना स्वाभाविक ही है। आप अपने प्रयासों में सफल हों, इसके लिए मेरी शुभकामनाएं हैं। इस अवसर पर यह भी याद रखना जरूरी है कि आपकी सफलता में, आपके परिवार के सदस्यों से लेकर मित्रों, समाज, राज्य और वे जिन्होंने ये ज्ञान मंदिर स्थापित किए हैं, सभी ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। आपको यह सफलता इन सभी के कारण मिली है। जो शिक्षा आपने प्राप्त की है, निस्संदेह वह आपकी एक मूल्यवान सम्पत्ति है। आप यह अवश्य ध्यान में रखें कि यह सम्पत्ति जो आपने प्राप्त की है और समाज का जो विश्वास आपने प्राप्त किया है, उसका इस्तेमाल आप सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में करेंगे। विद्या वह धन है जिसमें कोई हिस्सा नहीं माँग सकता। इसकी कभी चोरी

नहीं हो सकती या यह दूसरों को बाँटने से कम नहीं होती, बल्कि बढ़ती है। यह आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि है।

मैं इस अवसर पर यह आह्वान करना चाहूंगी कि राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में आप सभी युवाओं को आगे आना पड़ेगा। भारत एक युवा राष्ट्र है जिसमें युवकों की संख्या सर्वाधिक है। इसी कारण यह कहा जाता है कि भारत का भविष्य युवाओं के हाथ में है और युवा ही भारत का भविष्य हैं। मैं समझती हूँ कि देश में समानता की भावना, गरीबी और अज्ञानता के निवारण के हमारे राष्ट्रीय अभियान में सुशिक्षित नवयुवकों को अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। शिक्षित नवयुवकों को इन विषयों पर गहन चिंतन करना होगा। उन्हें वैयक्तिक या वर्गगत स्वार्थों की संकीर्ण भावनाओं से ऊपर उठने का प्रयास करना होगा। उनकी व्यक्तिगत सफलताएं ऐसी हों जिनसे न केवल समाज का भला हो अपितु राष्ट्र को भी उपलब्धि हासिल हो सके।

अंत में मैं यह कहना चाहूंगी कि आज यहाँ काशी में आकर मुझे खुशी हुई। यहाँ भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक परम्परा के दर्शन होते हैं। काशी में ही तुलसीदास जी ने भारतीय दर्शन के मूलभूत सिद्धांतों का प्रतिपादन किया था। उनका कथन है—

परहित सरिस धर्म नहीं भाई
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।

अर्थात्, दूसरों की भलाई के समान अन्य कोई श्रेष्ठ धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा पहुंचाने से बड़ा कोई अधर्म नहीं है। इस प्रकार परोपकार और अहिंसा की भावना की आज एक बड़ी आवश्यकता है। मैं चाहती हूँ कि आप इस शिक्षा को याद रखें और जब कभी कोई दुविधा हो तो आप इन्हें अपने जीवन में अपनाएं।

मुझे विश्वास है कि इस विश्वविद्यालय में आपको प्राप्त शिक्षा से, आने वाले वर्षों में, समाज और देश को लाभ मिलेगा। मैं आपके सुखद और उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ तथा कुलपति, सभी अध्यापकों और कर्मियों को मेरी शुभकामनाएं।

धन्यवाद,

जय हिन्द।